वर्तमान समाज का बदलता परिदृष्य

मनुष्य समाज की एक ईकाई है। मनुष्य से परिवार और परिवार से समाज का निर्माण होता है। समाज शब्द आते ही मन के सामने एक आदर्श, सुनीतियों से बंधा एक प्रतिबिम्ब दौड़ जाता है। आज जिस तरह दो दशक से समाज तथा समाज के लोगों के अन्दर वृत्ति और कृत्ति में परिवर्तन आया है। यह एक विचारणीय तथ्य है। युवती तथा युवाओं में बढ़ती फैशनपरस्ती, फैशन शो, मॉडलिंग के बढ़ते कदम ने आज शहरों से बढ़कर गॉवों की चूल्हों और गलियों तक अपना पॉव पसार चुका है। यही कारण है कि आज नित-प्रतिदिन चौकाने वाली घटनायें घटित हो रही है। जब पश्चिमी संस्कृति ने अपना पाँव पसारा है तब से बलात्कार, अपहरण, हत्यायें, नारी शोषण का ग्राफ बढ़ा है। भारतीय नारी तथा भारतीय संस्कृति के अस्तित्व पर सवालियां निशान लगने लगा है। फैशन के युग में बढ़ते दौर में युवकों एवं युवतियों को शरीर पर कम कपड़े पहन कर प्रदर्शन करने की होड़ लगी हुई है। जो एक भयावह स्थिति है। इससे मनुष्य के दिमाग पर विकृत संकल्पों का उदय होता है, और वह ऐसे कुकृत्य कर्मों को करने के रास्ते पर उतरने के लिए आमदा हो जाता है। ज्यादातर समाज को अनिष्टता की ओर ढकेलने में पश्चिमी संस्कृति के दौर ने अपनी खूब ताकत दिखाई है।

राजनीति का खूब मौसम अपने चरम पर चल रहा है। अपना-अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए तथा कुर्सी की सत्ता लेने के होड़ में कीचड़ उछाल वक्तव्य व्यक्त करने में भी नहीं चूक रहे हैं। न तो चुनवाव आचार-संहिता, मानवाधिकार का ध्यान है न तो कोई मर्यादा है। यहाँ तक कि विभत्स विज्ञापनों के द्वारा भी लोगों तक सत्तासीन होने के लिए देने से नहीं अलग रहें है। जब चुनावी मौसम आता है तब देश के विकास के लिए, एकता, धर्मनिरपेक्षता की बात करते है परन्तु सत्ता पर आसीन होते ही अपने वायदे पर खरे उतरने की भूल तक नहीं करते। चुनवाी सर्वेक्षण करने पर मिलता है कि कई राज्य ऐसे है जहाँ अधिकतर मफिया, बाहुबली जो सलाखों के पीछे जेल में बंद है तथा दूसरी तरफ चुनाव लड़ रहे है। ऐसे लोग कहा तक एक अच्छे समाज का निर्माण कर पायेंगे। एक समय था जब महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य देशप्रेमी नेताओं ने इस देश की अस्मिता को मुक्त करने के लिए अपने आप को नहीं बख्स सकें। रामराज्य की कल्पना को संजोये बापूजी ने केवल शरीर पर नाम मात्र का कपड़ा पहने इस संसार से विदा ले लिए। उनकी सत्यवादिता तथा अहिंसा केवल किताबों में ही लिखी रह गयी। आने वाली पीढ़ी पर उन्होंने सपने संजाये थे परन्तु हम सभी ने कितना पूरा किया यह देश के हर एक लोगों को अपने आप से पूछना चाहिए।

बढ़ते घोटाले, रिश्वत खोरी, अपहरण, अनैतिकता को देखते हुए यही लगता है कि शायद ही यह सपना सच हो पायेगा। यह जरूर है कि आज सूचना के युग में हम आगे बढ़ रहे हैं। नई तकनीकियों का विकास कर रहे हैं। शक्तिशाली बनने में पूरी ताकत लगा दिये हैं। परन्तु इसके साथ-साथ उस नैतिकता के रूप में भी अपनी पहिचान बनानी चाहिए, जिससे रामराज्य की परिकल्पना साकार हो सकेगी।

प्रस्तुति बी. के. कोमल

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com